delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 11

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ

शिवभगवानुवाच – जब तुम मास्टर सर्वशक्तिमान के स्वमान में रहते हो तो तुम्हें संकल्प सिद्धि प्राप्त हो जाती है जिससे तुम कोई भी कार्य कर सकते हो और दूसरों से करा सकते हो।

योगाभ्यास – मैं मास्टर सर्वशक्तिमान फरिश्ता हूँ...मुझसे शक्तियों की लाल किरणें चहुँ ओर फैल रही हैं, मेरे सिर के ऊपर सर्वशक्तिमान की छत्रछाया है... अन्य सभी भी फरिश्ते हैं... उनके ऊपर भी शिव बाबा की किरणें आ रही हैं।

अमृतवेला - अ. उठते ही पहला संकल्प करें कि मैं बाबा के प्यार व दुलार में पलने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ... बाबा वतन से नीचे आ गये हैं और प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरकर मुझे वरदान दे रहे हैं। मैं बाबा की दृष्टि से निहाल हो रहा हूँ... और अपने श्रेष्ठ भाग्य पर इठला रहा हूँ...।

ब. बाबा ने हमें हमारे पाँचों स्वरूपों की स्मृति दिलाई है। अत: अमृतवेले हम इन पाँचों स्वरूपों का गहराई से अभ्यास व अनुभव करेंगे।

धारणा - सन्तुष्टता। संतुष्टमणि बन सदा संतुष्ट रहना है और सबको संतुष्ट करना है। याद रहे, जो मेरे भाग्य में है, वह मुझसे कोई छीन नहीं सकता और जो मेरे भाग्य में नहीं है, वह मुझे कोई दे नहीं सकता। समय से पहले और भाग्य से ज़्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। इसलिए संतुष्टता को सदा के लिए अपना श्रृंगार बना लें।

चिन्तन - संतुष्टता क्यों आवश्यक है? असंतुष्टता का क्या कारण है? स्वयं संतुष्ट रहने और दूसरों को संतुष्ट करने के लिए क्या करें? संतुष्टता के लिए बाबा के उच्चारे पाँच महावाक्य लिखें।

स्वमान- मैं मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ

वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी मेरा बाप है... उन्होंने वरदान के रूप में अपनी सर्व शक्तियाँ मुझे दे दी हैं... सर्व शक्तियाँ परमात्म अधिकार के रूप में प्राप्त हैं।

योगाभ्यास - अ. मैं मास्टर ऑलमाइटी, वर्ल्ड ऑलमाइटी बाबा से कम्बाइंड हूँ... मैं सर्वशक्तियों के प्रभामण्डल में हूँ... सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा से चारो ओर फैल रही हैं...।

ब. स्वराज्य अधिकारी राजा बन भृकुटि सिंहासन पर बैठकर अपनी सर्व सूक्ष्म व स्थूल कर्मेन्द्रियों की दरबार लगायें... और एक-एक से उनके कार्य की जानकारी लें... उन्हें श्रीमत अनुसार श्रेष्ठ संकल्प व कर्म करने की प्रेरणा व आज्ञा दें... किसी भी कर्मेन्द्रिय के गलती करने पर उसे सावधान करें और यदि फिर भी वह वही गलती दुहराये तो उसे सज़ा दें... अपने मन मंत्री से आप इस प्रकार बातें करें कि परचिंतन तो तू जन्म-जन्म करता रहा, अब स्वचिंतन कर... जन्म-जन्म तो दुनियावी बातों में भटकता रहा, अब ऊपर चल... मगन हो जा प्रभु प्यार में...।

अमृतवेला के लिए अभ्यास - अ. सर्वशक्तिमान बापदादा का आह्वान करें... बापदादा वतन से उतर कर मेरे पास आ गये हैं और उन्होंने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया है... उनके हाथ से सर्व शक्तियों की रंग-बिरंगी किरणें निकलकर मुझमें समा रही हैं... मैं सर्व शक्तियों से चार्ज होता-होता मास्टर सर्वशक्मिान बनता जा रहा हूँ... और विश्व ग्लोब पर बैठकर सारे विश्व को शक्तियों की सकाश दे रहा हूँ...।

ब. मास्टर सर्वशक्मिान बनकर सर्वशक्मिान से बातें करें। शिव शक्ति बनकर शिव बाबा से बातें करें कि आईये बाबा हम दोनों मिलकर सारे विश्व का कल्याण करें... इस महानतम कार्य में आप अकेले नहीं हैं, हम भी मन-प्राण से आपके साथ-साथ हैं... हम आपकी परछाई हैं... आप सूर्य हैं तो हम आपकी रश्मियाँ हैं... आप गुलाब हैं तो हम आपकी सुगंध हैं... हम दोनों मिलकर विश्व को स्वर्ग बनाकर रहेंगे।

धारणा - अपने संकल्प और समय के खज़ाने को वेस्ट से बचाना। समय और संकल्प को वही सफल करते हैं जिन्हें इनका महत्व ज्ञात होता है और जिनके जीवन का कोई महान लक्ष्य होता है।

चिन्तन - अपने समय-संकल्प के बचत की स्कीम बनायें। कैसे पूरा सफल करें अपने संगमयुगी संकल्प और समय के खज़ाने को?

जो पारदर्शी, वही दर्शनीय ....

-पेज 2 का शेष

था। उसे खयाल था कि लकवा लग गया है। और खयाल इतना मज़बूत हो गया था कि वह हाथ-पैर हिला-डुला भी नहीं सकता था, उठ भी नहीं सकता था! फिर तीन साल से निरंतर पड़ा था बिस्तर पर। और ध्यान निरंतर लकवे पर ही रहा तीन वर्षों तक, वह लकवा मज़बूत ही होता चला गया था।

तीन वर्ष बाद एक दिन आधी रात उसके मकान में आग लग गई और एक सेकेंड को उसका ध्यान लकवे से हटकर आग पर चला गया, जो बिल्कुल स्वाभाविक था। वह आदमी निकल कर मकान के बाहर आ गया। जब बाहर आ गया और लोगों ने उसे देखा, तो लोगों ने कहा, अरे तुम? तो उसने देखा, वह वापस लकवा खाकर गिर पड़ा।

क्या, हुआ क्या? यह आदमी बाहर आया कैसे? अगर यह लकवा सच में था तो यह आदमी बाहर मकान के आ नहीं सकता। पूरी अटेंशन उसकी लकवे से हट गई। इतने ज़ोर से हटी, मकान में आग लगी, कि उसे स्मरण भी न रहा कि मेरा शरीर भी है, शरीर को लकवा भी है। यह कोई बात स्मरण न रही, वह बाहर आ गया। लेकिन जैसे ही स्मरण दिलाया गया, वह वापस गिर पड़ा! अब वह खुद ही नहीं मान सकता कि यह कैसे संभव हुआ! यह अब गिर जाना क्या है? फिर पूरा का पूरा ध्यान लकवे पर आ गया।

हमारा ध्यान जहां है, वहां हम जागृत हो जाते हैं। जहां से हमारा ध्यान हट जाता है, वहां हम मूर्च्छित हो जाते हैं। अगर हम ठीक से समझें तो मूर्च्छा हमारी जागृति की छाया है। जहां मूर्च्छा होती है, वहां जागृति नहीं होती; जहां जागृति होती है, वहां मूर्च्छा नहीं होती। लेकिन जिस तरफ जागृति का रुख होगा, उससे ठीक उलटी तरफ मूर्च्छा का रुख होगा।

तो एक तरफ देखने में प्रश्न ठीक मालूम पड़ता है कि स्वभाव हमारा जागरण है, चेतना है, तो यह अचेतना कैसी? यह मूर्च्छा कैसी? लेकिन इसी स्वभाव के कारण है वह भी। वह भी इसी की छाया है पीछे पड़ने वाली।

हम रास्ते पर चलते हैं, सूरज निकला हुआ है, हमारी छाया बनती है। हम पूरे प्रकाशित हैं, पीछे एक छाया बनती है। हम प्रकाशित हैं, यह भी सूरज के कारण; और हमारे पीछे जो छाया बनती है, यह भी सूरज के कारण। छाया बनने का कारण कोई और नहीं है और हमारे प्रकाशित होने का कोई कारण और नहीं है। लेकिन हम पूछ सकते हैं कि जो हम तक को प्रकाशित कर देता है, वह इतनी सी छाया को प्रकाशित नहीं करता!

असल में जितने हिस्से में हम प्रकाश को रोक लेते हैं, उतने हिस्से में पीछे छाया बन जाती है। वह छाया हमारे द्वारा रोका गया प्रकाश है। अगर हम कांच के व्यक्ति हों तो फिर छाया नहीं बनेगी। क्योंकि हम ट्रांसपैरेंट होंगे, फिर हमारे आर-पार किरण निकल जाएगी, फिर कोई छाया नहीं। कांच की कोई छाया नहीं बनेगी। जितना पारदर्शी होगा, उतनी छाया नहीं बनेगी। अगर थोड़ा भी अपारदर्शन है, तो उतनी छाया बन जाएगी। तो अगर पूर्ण पारदर्शी व्यक्तित्व हो, तो फिर छाया नहीं बनेगी सूरज की।

इसे इस तरह भी समझना चाहिए कि हमारा स्वभाव तो प्रकाश है, लेकिन अभी हमारा प्रकाश किन्हीं-किन्हीं केन्द्रों पर प्रवाहित होता है। वह दीए की भांति कम, बैटरी की भांति ज़्यादा है। बैटरी भी दीया बन सकती है, सिर्फ उसके फोकस को अलग कर देने की बात है। ऊपर से फोकस को अलग करके अगर हम बैटरी को रख देंगे तो बैटरी दीया बन जाएगी। असल में बैटरी दीया ही है, सिर्फ उस पर एक फोकस भी लगा हुआ है। अगर हम दीए पर भी एक फोकस लगा दें तो प्रकाश बंध जाएगा और उस धारा में बहेगा।

अजमेर-राज.। 20 वर्ष से भी अधिक समय से राजयोग का अभ्यास करने वाले ब्र.कु. भाई बहनों के सम्मान समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य भाई बहनें।

वांसवाड़ा। महाशिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. रीटा, नगर निगम सभापति मंजू बाला पुरोहित, पूर्व पार्षद तथा पार्षद लाभ चन्द पटेल।

वरनाला-पंजाब। शिवरात्रि महोत्सव पर डिप्युटी कमिश्नर गुरलवलीन सिंह सिद्धू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बृज। साथ हैं ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. सीमा, व ब्र.कु. संगीता।

झज्जर-हरियाणा। महाशिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. सुनंदा व डॉ. अवतार भाई।

सैफई-उ.प्र.। सैफई महोत्सव के दौरान मंच पर उपस्थित हैं ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष डॉ. टी. प्रभाकरण, सांसद तेजप्रताप यादव की माँ मृदुला यादव, रजिस्ट्रार, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. निधि व अन्य।

लुधियाना-पंजाब। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्म स्मृति में विधायक सरदार दर्शन सिंह शिवालिक, पंजाब स्टेट पावर कॉर्पोरेशन लि. के चीफ इंजीनियर सरदार रछपाल सिंह, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. सरस तथा अन्य।